शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

ग्लोबलाइजेशन और भारतीय संगीत कला

डॉ० अनिता रानी
प्रोफेसर वरिष्ठ प्रवक्ता, संगीत सितार विभाग
बी०डी० जैन गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज, आगरा
ईमेलः *dr.anita80@gmail.com*

प्राप्तिः 13.03.2023
स्वीकृतः 15.03.2023

11

सारांश

संसार में जितनी भी विधाएँ एवं कलाएँ है, उन सभी में संगीत कला का स्थान सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र का मनुष्य स्वान्तः सुखाय संगीत की शरण चाहता है। यह लौकिक तथा पारलौकिक, दोनो ही सुखों को प्रदान करने वाला, तन्त्र–मन्त्र की मूल शक्ति तथा ब्रह्म का अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप है। संगीत के द्वारा मानव में सौन्दर्य के प्रति संवेदनशीलता का विकास होता है जिससे उसमें सांस्कृतिक परिष्कार आता हैं। संगीत एक ऐसा आधारभूत ज्ञान है, जिसके चारो ओर ज्ञान की अन्य शाखायें विकसित हुई हैं। संगीत में इतनी शक्ति है कि श्रोता रसमग्न होकर सांसारिक मोह को भूलकर कल्पना के सागर में झुमने लगता हैं। इसी काल्पनिक स्वरूप को साकार करने की क्षमता रखती है कला। मन का कलेश और दुनिया के समस्त अवसाद उन क्षणों में घुलकर धुल जाते हैं, और जब इस कला–लोक की समाधि में चेतना का उत्थान होता है तो व्यक्ति अपने को तरोताजा महसूस करता है। कपड़े पर छपा हुआ हाथी, वास्तविक हाथी नही होता, यह जानते हुए भी वह मनुष्य को सुख देता है। कला की यही शक्ति मिथ्यात्व को जन्म देती है और इस प्रकार विद्या से अविद्या जन्म–मरण की श्रृंखला चलती रहती है, संगीत को एक सार्वभौम भाषा माना जाता है। चाहे आप भारत में ओपेरा संगीत सुने या अमेरिका में राग–मालकौस कोई भी अन्तर नही पड़ेगा, क्योकि उसमें मात्र संगीत है। किसी देश या भाषा से सम्बन्ध मानकर उस संगीत का सही रसास्वादन नही किया जा सकता। डॉ० मधुरलता भटनागर के शब्दों में जिस प्रकार सुगन्ध अपना वातावरण बना लेती है, उसी प्रकार संगीत कला भी अपना वातावरण सृजित कर लेती है। संगीत और सुंगध दोनों से प्राप्त आनंद की व्याख्या करना कठिन है।[1]

आज सारा विश्व ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में सांस ले रहा है। आज भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी एक नई पहचान बनाने की ओर अग्रसर है तो इसका मुख्य कारण है हमारा संचार–माध्यम। ग्लोबलाइजेशन के इस युग में संचार–माध्यमो ने भारतीय संस्कृति को इसके आदर्शों को विश्व से परिचित कराया है। वर्तमान युग में शिक्षा का क्षेत्र चाहे कोई भी हो सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, ऐसा माध्यम है जो समूचे विश्व को उपग्रह के माध्यम से जोड़ता है। वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत को राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर चिन्हांकित करने तथा समाज के जनमानस मे संगीत विषय की सफल सार्थकता को प्रमाणित करने और संगीत विषय को समुचित संरक्षण प्रदान करने हेतु प्रचार–प्रसार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ग्लोबलाइजेशन के इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ मानव जीवन में हृदयगत भावनाओं का स्थान मस्तिष्क की जटिलताओं ने ले लिया है। अतएव प्रगति पथ पर सत्त गतिमान रहने की महत्वकांक्षा ने जहाँ सुविधा, अविष्कार, सूचना, प्रौद्योगिक, विकास, प्रयोग बहुकुशलता तकनीकी ज्ञान समय श्रम व ऊर्जा की बचत हेतु संसाधन तो दिए ही है, साथ ही साथ अनियमित जीवन शैली, तनावजनित बढ़ते मानसिक रोग, अर्धविकसित सुविधाभोगी, मानव, आलस्य, अनिदा, अर्थ के सम्मुख सर्वेदना व रिश्तो की उपेक्षा पर्यावरण प्रदूषण की सौगात भी प्रदान की है। जिनके निवारण हेतु समयोचित प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। संगीतादी कलाओं के आश्रय से वर्तमान परिदृश्य को परिवर्तित किया जा सकता है।

आज का मानव वैश्वीकरण के इस युग में संशय की स्थिति में खड़ा है। वर्तमान संगीत क्या है? बीसवीं सदी के अन्तिम चरण में भारतीय संगीत का चेहरा जितनी तीव्र गति से बदला है, वह गति और परिवर्तन दोनों चौंकने वाली बात है। बदलते वक्त में परिवर्तन को आत्मसात् करना सहज प्रक्रिया है, लेकिन सांस्कृतिक बदलाव का दौर पुरानी समृद्धि को ही निगलने लगे तो क्या कहेगें। नब्बे का दशक शुरू होने पर बाजार में खुलापन आया और भूमंडलीकरण शुरू हुआ, जिसके साथ ही मानवीय उद्यम के कई क्षेत्रों में खासकर कला का हास होने लगा। आज बाजारवाद देश हावी है तो भला संगीत इससे कैसे अछूता रह सकता है हमारी संगीतकला–संस्कृति पर पहले की तुलना में आज कई गुना ज्यादा खतरे मँडरा रहें हैं। जिस जमीन पर ये कलाएँ पनपी, आर्थिक उदारीकरण की आँधी उसे तेजी से निगल रही है। सांस्कृतिक रूप से न तो हम परम्परा वादी सामन्ती जकड़न से मुक्त हुए और ना ही आर्थिक सुधार में जमी विकृतियों से बचा पा रहे हैं। इन दोनो पाटो के बीच फँसे है हम। भारतीय समाज में आ रहे इन परिवर्तनों की जड़ बीसवीं सदी के अन्त में किए गए आर्थिक सुधार और संचार क्रान्ति में है। इस बात में कुछ सीमा तक सच्चाई भी है। किन्तु गौर करने की बात इससे भी आगे जाती है यह ठीक है कि संचार परिवर्तन का उपादान कारण, भुमण्डलीकरण है। ब्लैक बेल डिक्सनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार–भुमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न समाज के सामाजिक जीवन, राजनीति और व्यापारिक क्षेत्र से लेकर संगीत वेश–भूषा व जन मीडिया के क्षेत्रों तक अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त द्रुतगति से प्रभावित हुआ है। भूमण्डीलकरण परिवेश में समकालीन कला सृजन प्रक्रिया में नित्य परिवर्तन हो रहा है।

संगीत कला की सम्प्रेषण क्षमता ने ही आज वैश्विक परिदृश्य में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। विभिन्न देशों में सामूहिक संगीत प्रस्तुतियों से विश्व बंधुत्व की भावना का प्रसार होता है। वैश्विक स्तर पर सुना व देखा जाने वाला संगीत ही, पाश्चात्य हो या प्राच्य उसमें सुर सात ही माने जाते हैं। ग्लोबल विश्व में संगीत का पुरातन रूप 'शास्त्रीय संगीत है। पश्चिमी देश आज जिस ग्लोबलाइजेशन पर जोर दे रहा है, वह भारत के वसुधैव कुटुम्बकम की मूल भावना से अनुप्रेरित है। संगीत कला इस भावना के विकास से अत्यधिक साहयक सिद्ध हो रहा है। आज के इस वैश्वीकरण में हम पश्चिमी कला सें बहुत अधिक प्रभावित हो रहे हैं। वैश्वीकरण के इस दौर ने पूरी दुनिया में एक नई क्रान्ति ला दी है।

आज भारतीय संगीत के पटल पर जो शब्द सर्वाधिक सुनाई दे रहा है वह है "Global Music" मेरी परिभाषा के अनुसार, यह वह संगीत है जो वैशविक स्तर पर सुना जाता है और जिसका

उत्पादन–प्रकाशन और विवरण संगीत से सम्बन्धित उद्योगों से होता है। ग्लोबल संगीत वैश्वीकरण नियमों के अंकुश में है। जो ग्लोबल उत्पादन होते है वे यही संगीत Sponsor करते हैं और इसमें बाजार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो कि विभेदीकृत है। बीसवीं शताब्दी में भारतीय संगीत की सभी प्रवृत्तियाँ उभरी है। शास्त्रीय परम्परा के साथ लोक–संगीत, फिल्म–संगीत, नाटय–संगीत, सुगम–संगीत विशेष रूप से हिन्दुस्तानी संगीत में भारी परिवर्तन हुए है इन बदली हुई परिस्थितियों में जो कलाकार सामने आ रहे हैं, उनकी गायन शैली भी बदली हुई है। संगीत से सम्बन्धित वैश्विक स्तर पर पाँच मुख्य कंपनियाँ हैं, जो संगीत का वितरण कर रही हैं– यूनीवर्सल, सोनी ई०एम०आई०, बी०एम०जी० और बार्नर। बहुत सारी भारतीय कम्पनियाँ साझा कार्यक्रम बाह्य कम्पनियों के साथ बना रही है। हम कुल संगीत का अवलोकन करें तो पायेगें की 79 प्रतिशत संगीत सम्मिश्रित संगीत रहा, जबकि मौलिक संगीत केवल 19 प्रतिशत रहा।

ग्लोबलाइजेशन के इस युग ने सबसे बड़ा बदलाव तो ये किया है कि भारतीय संगीतकार बड़ी आडियंस के लिए कार्य करने लगे हैं। दुनियाभर में आज संगीत की इज्जत है। यूरोप और अमेरिका की युनिवर्सिटीज में हिन्दूस्तानी संगीत के विभाग बन रहे है और कई स्तरों पर इसका अध्ययन किया जा रहा है। पश्चिम के संगीतकार शास्त्रीय संगीत की बारीकियाँ समझने में दिलचस्पी ले रहे हैं और उसके साथ प्रयोग भी कर रहे हैं। देखते ही देखते पं० रविशंकर, उ० अली अकबर खॉ और उ० जाकिर हुसैन जैसे संगीतकार ग्लोबल हो गये हैं। आज भारतीय गायक, वादक, नर्तक दुनिया के हर कोने में परफार्म करने जाते हैं और वाह–वाही लूटते हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी की नित्य प्रति नवीन से नवीन एवं आत्याधुनिक इलेक्टॉनिक ध्वन्यकन उपकरणों ने संगीत की अपार सहायता की है। आज हम इन्ही उपकरणों की सहायता से अपने संगीत को संग्रहीत भी कर सकते हैं, और पुनः जब चाहे सुन भी सकते हैं। आज इलेक्ट्रॉनिक्स तकनीकी के माध्यम में तारपुरा व तबला जैसे वाघों की सजीव आवाज भी उपलब्ध हो गई है। सिंथसाइजर ने तो सैकड़ों वाघयन्त्रों को एक ही की बोर्ड पर संभर बनाकर चमत्कार कर दिया है। इस तरह संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्रपक्ष को समृद्ध बनाने में संचार माध्यमों ने अहम भूमिका निभाई है। रूकमणि देवी कला के विषय में कहते है कि कोई भी कला अप्रासंगिक होकर जीवित नहीं रह सकती। वह युगधर्म का प्रभाव ग्रहण करती हुई परिवर्तन के उतार–चढ़ाव, अपकर्ष, उन्नति–अवनति के फल–स्वरूप मात्र वाह्य कलेवर बदलकर, प्रासंगिक होती चलती है लेकिन अपना आत्यिक सौन्दर्य नही खोती। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा इसका ज्वलंत प्रभाव है।

पं० रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी कला एवं अन्य ललित कलाओं के विषय में कहा था कि ''भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए संगीत तथा अन्य ललित कलायें जीवन में बड़ा महत्व रखती है। अचेतन की संपूर्ण अभिव्यक्ति इन्ही के माध्यम से होती है, अतः इन्हें किसी भी कीमत पर विकृत नही किया जाना चाहिए।

जहाँ तक बदलाव की वयार की बात है तो इसे तो कोई नही रोक सकता। संगीत ऐसी भाषा है जो सच्चे अर्थो में ग्लोबल है इसलिए इसमें इतने प्रयोग हो रहे हैं क्योंकि इसमें प्रयोग करने

की असीम सम्भावनाएँ हैं। बस देखना यह कि ग्लोबलाइजेशन की इस रेस में भारतीय संगीत अपनी पहचान ना खो दे। भारतीय संगीत की मूल आत्मा इसमें बसी रहें बस यही जिम्मा आज के संगीतकार उठा लें तो यह भारतीय संगीत की सबसे बड़ी सेवा होगी।

सन्दर्भ

1. भटनागर, मधुरलता. भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान. पृष्ठ **226.**
2. डॉ० हुकुमचन्द. आधुनिककाल में शास्त्रीय संगीत।
3. सक्सैना, डॉ० मधुवाल. भारतीय संगीत–शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर।
4. पदम्, करनैल सिंह. लोकमान और मध्यकालीन पंजाबी साहित्य।
5. संगीत मासिक पत्रिका. हाथरस।
6. संगीत कला विहार।
7. छायानट।